समय का उपयोग दूसरों के हित में हो

– आचार्यश्री महाप्रज्ञ

बीदासर, 28 मार्च।

''व्यक्ति अपने समय का उपयोग दूसरों की हित साधना में लगाते हैं। अपनी सुविधाओं को छोड़कर बड़ी निष्ठा के साथ जो सेवा करता है वह सचमुच उपयोगी व्यक्ति हो सकता है।'' उक्त विचार आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए फरमाये।

आचार्यप्रवर ने फरमाया कि जो व्यक्ति कभी आवेश नहीं करता, शांत रहता है वह भी अपने आप में एक बड़ी साधना है। हर व्यक्ति को इस तरह के कार्यों से एक दूसरे व्यक्ति से सीख लेनी चाहिए।

युवाचार्यश्री महाश्रमणजी ने फरमाया कि आदमी विचार वाणी का साधन ऐसा है जिसके द्वारा अपने भावों को अभिष्ट व्यक्ति तक पहुंचाया जा सकता है। आदमी ईशारे के द्वारा अपनी बात को समझाने का प्रयास करता है। परंतु इशारे की अपेक्षा वाणी ज्यादा सशक्त माध्यम होता है। वाणी की शक्ति हर आदमी के पास एक समान नहीं होती। किंतु जिस व्यक्ति के पास वाणी की शक्ति है वह उसका सम्यक उपयोग करे तो वाणी की भी सार्थकता सिद्ध हो सकती है।

युवाचार्यप्रवर ने फरमाया कि जिसके पास बुद्धि है और बौद्धिक विकास है तो वह इस बुद्धिबल का उपयोग अच्छे कार्यों में करे। क्योंकि बुद्धि एक शक्ति है, उसका प्रयोग विध्वंश में भी किया जा सकता है और रचनात्मक कार्यों में भी किया जा सकता है। बुद्धि के द्वारा समस्या को पैदा भी किया जा सकता है तो उसके द्वारा समाधान भी किया जा सकता है। बुद्धि बहुत बड़ी उपलब्धि है। बुद्धिमान लोगों के पास बहुत बड़ी चिंतन की शक्ति होती है। श्रम से चाहे कोई कार्य करे या न करे किंतु बुद्धि के द्वारा बहुत कुछ कर सकते हैं।

इस अवसर पर पचपदरा से अमृतलाल चौपड़ा के स्वर्गवास पर उनके पारिवारिकजन आचार्य महाप्रज्ञ से संबल प्राप्त करने उपस्थित हुए।

तेरापंथ भवन में मध्यान्ह में सरदारशहर निवासी प्रसिद्ध उद्योगपति श्री मूलचन्द मालू परिवार सहित आचार्यप्रवर एवं युवाचार्यप्रवर के दर्शन किये तथा उनसे आशीर्वाद प्राप्त किया।

– अशोक सियोल

संलग्न : फोटो